3 नादान दोस्त (प्रेमचंद)

लेखक का परिचय

प्रेमचंद का जन्म वाराणसी के निकट लमही नामक गाँव में सन् 1880 में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा वाराणसी में हुई। आर्थिक तंगी के कारण दसवीं कक्षा पास करते ही प्राइमरी स्कूल में शिक्षक बनना पड़ा। बी.ए. पास करने के बाद वे इंस्पेक्टर-ऑफ़-स्कूल हो गए। महात्मा गांधी से प्रेरित हो कर सरकारी नौकरी छोड़ दी और 1920 में असहयोग आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। उनका वास्तविक नाम धनपतराय था। आजीविका के लिए मुंशी प्रेमचंद या प्रेमचंद नाम से लेखन आरंभ किया। आरंभ में वे उर्दू में लिखते थे पर बाद में हिंदी में लिखने लगे। उन्होंने अपना एक छापाखाना खोला और हंस पत्रिका का संपादन भी किया। सन् 1936 में उनका देहांत हो गया। प्रेमचंद ने सरल, सहज और मुहावरेदार भाषा का प्रयोग करते हुए अपने साहित्य में समाज-सुधार और राष्ट्रीय भावना का समावेश किया है। उन्होंने लगभग साढ़े तीन सौ कहानियाँ लिखीं हैं, जो मानसरोवर नाम से आठ भागों में प्रकाशित हैं। उनके महत्वपूर्ण उपन्यास हैं— गोदान, गबन, सेवासदन, प्रेमाश्रम, निर्मला, रंगभूमि, कर्मभूमि आदि। इसके अलावा उन्होंने कई नाटक और निबंध भी लिखे।

पाठ का सार

प्रेमचंद द्वारा लिखित 'नादान दोस्त' निश्छल प्रेम से भरी दो बच्चों की कहानी है।

केशव के घर कार्निस के ऊपर एक चिड़िया अंडे दे देती है। सवेरे उठते ही केशव और उसकी बहन श्यामा उस कार्निस के सामने पहुँच जाते। चिड़िया और उसके अंडे देखकर वे खाने-पीने की सुध भूल बैठते। उन्हें दूध-जलेबी खाना भी याद नहीं रहता था। उनके दिल में तरह-तरह के प्रश्न उठते जैसे— अंडे कितने होंगे ? कैसे होंगे ? किस रंग के होंगे ? आदि। हर प्रश्न का जवाब वे स्वयं ही दे लेते थे कि चिड़िया के बच्चे फुर्र से उड़ जाएँगे। उनके मन की जिज्ञासा दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी। वे अंडे देखने के लिए अधीर हो उठे। उन्होंने अनुमान लगाया कि अब तक तीन अंडों से बच्चे निकल चुके होंगे, चिड़िया इतना दाना कहाँ से लाएगी। गरीब बच्चे भूख के मारे चूँ-चूँ करके मर जाएँगे। इस मुसीबत से निकलने के लिए दोनों ने फ़ैसला किया कि वे कार्निस पर थोड़ा-सा दाना रख दिया करेंगे ताकि चिड़िया को कहीं बाहर उड़कर नहीं जाना पड़ेगा। खाने के साथ-साथ दोनों के मन में प्यास और छाँव का प्रश्न भी उठा। आखिर यही फ़ैसला हुआ कि घोंसले के ऊपर कपड़े की छत बनाने, पानी की प्याली और थोड़े-से चावल रख देने की बात सोची। दोनों बच्चों ने माँ से आँख बचाकर कूड़े की टोकरी धूप से बचाने के लिए ले ली। गर्मी के दिन थे। बाबू जी दफ़्तर चले गए और माँ दोनों बच्चों को लेकर सो गई, लेकिन उनकी आँखों में नींद नहीं थी। वे धीरे से बाहर आए। एक स्टूल को चौकी पर रखकर केशव ऊपर चढ़ता है और श्यामा दोनों हाथों से स्टूल पकड़े हुए खड़ी थी। केशव ने ज्यों ही कार्निस पर हाथ रखा, दोनों चिड़ियाँ उड़ गईं। केशव ने देखा कार्निस पर कुछ तिनके बिछे हुए हैं और उन पर तीन अंडे पड़े हुए हैं। श्यामा का भी उन्हें देखने का मन करता है। केशव ने तिनकों को हटाकर पुरानी धोती का टुकड़ा रखकर गद्दी बनाई, उसके पास पानी व चावल की कटोरियाँ रखीं। वह श्यामा को समझाता है कि तुम छोटी हो, ऊपर नहीं चढ़ सकती। जब बच्चे निकलेंगे तो हम उन्हें पाल लेंगे। तभी माँ ने किवाड़ खोला और कहा कि तुम दोनों बाहर क्यों निकले ? माँ ने दोनों को डाँट-डपटकर फिर कमरे में बंद कर लिया। केशव और श्यामा दोनों सो गए। जैसे ही चार बजे उन दोनों की आँखें खुलीं। श्यामा कार्निस के पास गई, उसने देखा कि टोकरी नीचे गिरी हुई है, अंडे भी टूटे पड़े हैं, दाने व पानी की कटोरियाँ भी नीचे गिरकर टूट चुकी थीं। उसने घबराकर अपने भाई केशव को बुलाया, उसके चेहरे का रंग उड़ गया। यह सब क्या हुआ, उन्हें समझ नहीं आ रहा था। अंडे टूट गए, इसका मतलब था कि अब अंडों से बच्चे नहीं निकलेंगे। तभी माँ सोटी लिए बाहर आती है। टूटे अंडों को देखकर बच्चों को गुस्सा करते हुए कहती हैं कि तुमने ज़रूर अंडों को छुआ होगा। श्यामा बता देती है कि भैया ने अंडों को छुआ था। तब माँ बच्चों को समझाती हैं कि छूने से चिड़िया के अंडे गंदे हो जाते हैं। चिड़िया फिर उन्हें नहीं सेती। यही कारण है कि

तुम्हारे छूने के बाद चिड़िया ने अंडों को गिरा दिया। केशव ने ही अंडों को उठाकर गद्दी पर रखा था, उसे ही पाप लगेगा। अब उसे अपनी गलती पर अफ़्सोस हो रहा था कि अंडों की हिफ़ाजत करने में उनका सत्यानाश कर डाला। उसे बहुत दुख हुआ, जब कभी भी यह बात याद आती तो वह रोने लगता था। वे दोनों चिड़ियाँ फिर कभी वहाँ दिखाई नहीं दीं।

शब्दार्थ : कार्निस = दीवार की कँगनी (cornice)। **सुध** = खबर (news)। **सवाल** = प्रश्न (question)। **जवाब** = उत्तर (answer)। **फ़ुरसत** = खाली समय (leisure)। **तसल्ली** = सांत्वना, दिलासा, ढाढ़स (assurance)। **बगैर** = बिना (without)। **फ़ुर्र** = छोटी चिड़ियों के उड़ने से होने वाली परों की आवाज़ (sound of birds flight)। **दिल** = हृदय (heart)। **गर्व** = घमंड (pride)। **पेचीदा** = कठिन, जटिल, टेढ़ा (tedious)। **गुज़र गए** = बीत गए (past)। **जिज्ञासा** = उत्सुकता (inquisitiveness)। **अधीर** = बेचैन, उतावला, आकुल (anxious)। **अनुमान** = अंदाज़ा (estimate)। **जरूर** = अवश्य (essential)। **मुसीबत** = कठिनाई (difficulty)। **फ़ैसला** = निश्चय (decision)। **तकलीफ़** = दिक्कत (ordeal)। **स्वीकृत** = हाँ करना (approval)। **चाव** = शौक (fond of)। **सूराख** = छेद (hole)। **आड़** = ओट (protection)। **मौका** = अवसर (opportunity)। **सिटकनी** = कुंडी (bolt)। **हिफ़ाजत** = रक्षा (security)। **हिकमत** = युक्ति, उपाय (means, wayout, solution)। **चिथड़े** = फटा-पुराना कपड़ा, गूदड़ (rags)। **आहिस्ता** = धीरे-से, धीमी आवाज़ से (slowly)। **विश्वास** = भरोसा (assurance)। **सिर्फ़** = केवल (only)। **पर** = पंख (feather)। **मुहब्बत** = प्रेम, प्यार (love, affection)। **हिस्सेदार** = साझेदार (partner)। **ताकना** = झाँकना (keeping)। **सहमी हुई** = डरी हुई (scared, afraid)। **उजला** = सफ़ेद (white)। **सज़ा** = दंड (punishment)। **भीगी बिल्ली बनना** = डर जाना (scared)। **दुष्ट** = बुरा (wicked)। **यकायक** = अचानक (suddenly)। **अफ़सोस** = पश्चाताप (repentence)। **दम रोकना** = साँस रोकना (holding breath)। **ज्योंही** = जैसे ही (as)। **कै** = कितने (how many)।

सप्रसंग व्याख्या तथा अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर

1. **(पृ. 15)** गरमी के दिन थे। बाबू जी दफ़्तर गए हुए थे। अम्माँ दोनों बच्चों को कमरे में सुलाकर खुद सो गई थीं। लेकिन बच्चों की आँखों में आज नींद कहाँ? अम्माँ जी को बहलाने के लिए दोनों दम रोके आँखें बंद किए मौके का इंतज़ार कर रहे थे। ज्यों ही मालूम हुआ कि अम्माँ जी अच्छी तरह से सो गईं, दोनों चुपके से उठे और बहुत धीरे से दरवाज़े की सिटकनी खोलकर बाहर निकल आए।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'वसंत भाग-1' में संकलित पाठ 'नादान दोस्त' से ली गई हैं। इसके लेखक प्रेमचंद हैं। इसमें लेखक ने बच्चों के मन की जिज्ञासा के बारे में बताया है।

व्याख्या : लेखक का कहना है कि जब से बच्चों ने चिड़िया और उसके अंडों को देखा। उनके मन में तरह-तरह के सवाल उठने लगे। वे चिड़िया के बच्चों के आराम के लिए हर संभव कार्य करने को तैयार हो गए। गर्मी के दिन थे, बाबू जी के दफ़्तर जाने के बाद घर का काम समाप्त कर दोपहर में अम्माँ बच्चों को अपने पास सुलाकर खुद भी सो गई। परंतु बच्चों को नींद नहीं आ रही थी। माँ को दिखाने के लिए सोने का नाटक करते रहे। जैसे ही उन्हें लगा कि माँ गहरी नींद सो गई है। तो दोनों धीरे से दरवाज़े की सिटकनी खोलकर बाहर निकल आए।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर—

(क) पाठ व लेखक का नाम लिखिए?

उत्तर— पाठ का नाम नादान दोस्त, लेखक का नाम प्रेमचंद।

(क) उस समय कैसे दिन थे?

उत्तर— उस समय गर्मी के दिन थे।

(ख) अम्माँ जी को बहलाने के लिए बच्चों ने क्या किया?

उत्तर— अम्माँ जी को बहलाने के लिए दोनों बच्चे दम रोके आँखें बंद किए सोने का नाटक करते रहे।

(ग) बाबू जी कहाँ गए हुए थे?

उत्तर— बाबू जी दफ्तर गए हुए थे।

(घ) ज्योंही अम्माँ जी सो गईं बच्चों ने क्या किया?

उत्तर— ज्यों ही बच्चों को लगा कि अम्माँ जी सो गई हैं दोनों चुपके से उठे और बहुत धीरे से दरवाज़े की सिटकनी खोलकर बाहर निकल आए।

2. **(पृ. 16)** केशव ने ज्यों ही कार्निस पर हाथ रखा, दोनों चिड़ियाँ उड़ गईं। केशव ने देखा, कार्निस पर थोड़े तिनके बिछे हुए हैं और उन पर तीन अंडे पड़े हैं। जैसे घोंसले उसने पेड़ों पर देखे थे, वैसा कोई घोंसला नहीं है। श्यामा ने नीचे से पूछा— कै बच्चे हैं भइया?

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'वसंत भाग-1' में संकलित कहानी 'नादान दोस्त' से ली गई हैं। इसके लेखक 'प्रेमचंद' हैं। इन पंक्तियों में चिड़िया के घोंसले के बारे में बताया गया है।

व्याख्या : लेखक का कहना है कि दोनों बच्चे अंडे देखने के लिए उत्सुक थे। केशव स्टूल पर चढ़ता है और जैसे ही उसका हाथ कार्निस पर पहुँचता है, दोनों चिड़ियाँ वहाँ से उड़ जाती हैं। वह देखता है कि कार्निस पर कुछ तिनके पड़े हैं। जैसा घोंसला वह पेड़ों पर देखा करता है वैसा घोंसला यहाँ नहीं था। इन तिनकों पर तीन अंडे रखे हुए थे। श्यामा का मन भी करता है कि वह भी घोंसले को देखे। वह अपने भाई से पूछती है कि कितने बच्चे हैं?

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर—

(क) केशव ने ज्यों ही कार्निस पर हाथ रखा क्या हुआ?

उत्तर— केशव ने ज्यों ही कार्निस पर हाथ रखा दोनों चिड़ियाँ उड़ गईं।

(ख) कार्निस पर क्या था?

उत्तर— कार्निस पर कुछ तिनके बिछे हुए थे।

(ग) घोंसले में कितने अंडे थे?

उत्तर— घोंसले में तीन अंडे थे।

(घ) श्यामा ने केशव से क्या पूछा?

उत्तर— श्यामा ने केशव से पूछा— कै बच्चे हैं भइया?

प्रश्न-अभ्यास

कहानी से—

प्रश्न 1. अंडों के बारे में केशव और श्यामा के मन में किस तरह के सवाल उठते थे? वे आपस ही में सवाल-जवाब करके अपने दिल को तसल्ली क्यों दे दिया करते थे?

उत्तर— केशव और श्यामा के मन में अंडों को देखकर जिज्ञासा बढ़ रही थी। यही कारण था कि उनके मन में तरह-तरह के सवाल उठ रहे थे। वे पहली बार चिड़िया को वहाँ देख रहे थे। अंडे कितने बड़े होंगे? किस रंग के होंगे? कितने होंगे? उनमें से बच्चे किस तरह निकल आएँगे? क्या खाएँगे? बच्चों के पर कैसे निकलेंगे? घोंसला कैसा है? अब इन सब सवालों का जवाब कौन दे? अम्मा को घर के काम-धंधों से फ़ुर्सत नहीं थी और बाबू जी को पढ़ने-लिखने से। ऐसे में दोनों बच्चे आपस ही में सवाल-जवाब करके अपने दिल को तसल्ली दे दिया करते थे।

प्रश्न 2. केशव ने श्यामा से चिथड़े, टोकरी और दाना-पानी मँगाकर कार्निस पर क्यों रखे थे?

उत्तर— केशव ने श्यामा से चिथड़े, टोकरी और दाना-पानी मँगाकर कार्निस पर इसलिए रखे क्योंकि वह यह सोचकर घबरा उठे थे कि जब चिड़िया के बच्चे अंडों में से निकल आएँगे तो वह अपने बच्चों का पेट केसे भरेगी? गरीब बच्चे भूख के मारे चूँ-चूँ करके मर जाएँगे। चिथड़ों से गद्दी बनाई और टोकरी से धूप से बचने का इन्तज़ाम किया।

प्रश्न 3. केशव और श्यामा ने चिड़िया के अंडो की रक्षा की या नादानी?

उत्तर— केशव और श्यामा वास्तव में अंडों की रक्षा करना चाहते थे। पर उनकी नादानी के कारण अनजाने में अंडे टूट गए।

कहानी से आगे—

प्रश्न 1. केशव और श्यामा ने अंडों के बारे में क्या-क्या अनुमान लगाए? यदि उस जगह तुम होते तो क्या अनुमान लगाते और क्या करते?

उत्तर— केशव और श्यामा ने अंडों के बारे में अनुमान लगाया कि वे कैसे होंगे? कितने होंगे? कितने बड़े होंगे? अंडों से बच्चे कैसे निकलेंगे। क्या खाएँगे? किस रंग के होंगे?

यदि हम उनकी जगह पर होते तो हम भी इसी प्रकार के बाल सुलभ प्रश्नों का अनुमान लगाते। इनके अलावा यह सोचते कि अंडों से बच्चे बनने में कितने दिन लगेंगे? पक्षी के अंडों पर बैठने से बच्चे जल्दी क्यों निकलते हैं? हम उनको दूर से देखते और चिड़िया के लिए दाना-पानी दूर से ही रख देते।

प्रश्न 2. माँ के सोते ही केशव और श्यामा दोपहर में बाहर क्यों निकल आए? माँ के पूछने पर भी दोनों में से किसी ने किवाड़ खोलकर दोपहर में बाहर निकलने का कारण क्यों नहीं बताया?

उत्तर— माँ के सोते ही केशव और श्यामा दोपहर में चिड़ियों की देखभाल और अंडों के लिए छाँव का इंतज़ाम करने के लिए बाहर निकल आए। माँ के पूछने पर दोनों चुप रहे क्योंकि श्यामा को डर था कि केशव का नाम लेने पर उसकी पिटाई हो जाएगी, फिर साथ तो वो भी दे रही थी। ऐसे में श्यामा सिर्फ़ भाई के प्रति प्यार के मारे चुप थी या इस कसूर में हिस्सेदार होने की वजह से इसका फ़ैसला नहीं किया जा सकता। शायद दोनों ही बातें थीं।

प्रश्न 3. प्रेमचंद ने इस कहानी का नाम 'नादान दोस्त' रखा। तुम इसे क्या शीर्षक देना चाहोगे?

उत्तर— हम इस कहानी का नया शीर्षक 'रक्षा में हत्या' या 'नादान बालक' या 'अनजाने में हत्या' देना चाहेंगे। इसमें बच्चों ने जानबूझ कर अंडे नहीं तोड़े थे। वे तो चिड़िया की अधिक से अधिक देखभाल करना चाहते हैं। अंडों की रक्षा के लिए ही वे हाथ लगाते हैं, अंडे छूने से गंदे हो गए और चिड़िया ने उन अंडों को नीचे गिरा दिया।

अनुमान और कल्पना—

प्रश्न 1. इस पाठ में गरमी के दिनों की चर्चा है। अगर सरदी या बरसात के दिन होते तो क्या-क्या होता? अनुमान करो और अपने साथियों को सुनाओ।

उत्तर— इस पाठ में अम्माँ जी गरमी के कारण बच्चों को बाहर निकलने से रोकती हैं। लेकिन अगर सरदी या बरसात के दिन होते तो शायद कमरे से बाहर निकलने पर इतनी डाँट नहीं पड़ती। बच्चे बहाना बना सकते थे कि धूप में खेल रहे थे या बरसात में नहा रहे थे। बाकी चिड़िया की देखभाल के लिए दाना-पानी तो इसी प्रकार ही रखा जाता। रही बात कपड़ा रखने की, बारिश में ढकने की कोशिश की जाती पर सरदी में नहीं।

प्रश्न 2. पाठ पढ़कर मालूम करो कि, दोनों चिड़ियाँ वहाँ फिर क्यों न दिखाई दीं? वे कहाँ गई होंगी? इस पर अपने दोस्तों के साथ मिलकर बातचीत करो।

उत्तर— पाठ को पढ़ने से पता चलता है कि बच्चों के द्वारा अंडों के छेड़ने पर चिड़ियाँ उन अंडों को नीचे गिरा देती हैं उन्हें नहीं सेती और वहाँ से हमेशा के लिए चली जाती हैं। उस दिन के बाद वे चिड़ियाँ वहाँ पर कभी नहीं दिखाई दीं। वे उड़कर कहीं दूर सुरक्षित स्थान पर गई होगी ताकि कोई छेड़ न सके। वहीं पर उन्होंने अंडे दिए होंगे।

प्रश्न 3. केशव और श्यामा चिड़िया के अंडों को लेकर बहुत उत्सुक थे। क्या तुम्हें भी किसी नई चीज़, जगह या बात पर कौतूहल महसूस हुआ है? ऐसे किसी अनुभव का वर्णन करो और बताओ कि ऐसे में तुम्हारे मन में क्या-क्या सवाल उठे?

उत्तर— जिस प्रकार केशव और श्यामा चिड़िया के अंडों को लेकर उत्सुक थे उसी प्रकार मैं बिल्ली के छोटे से बच्चे को लेकर उत्सुक था। मेरे घर में बिल्ली ने दो छोटे बच्चे दिए। मुझे उनके खाने-पीने की चिंता लगी रहती। कभी कटोरी में दूध तो कभी पानी डालती रहती। वे छोटे से बच्चे कैसे उछलकर मेज़ पर चढ़ जाते। पूरे घर में घूमते। मुझे लगता, कि क्या ये मुझे पहचानते हैं कि मैं इन्हें दूध पिलाती हूँ। इन्हें घर की हर वस्तु कैसी लगती है?

भाषा की बात—

प्रश्न 1. श्यामा माँ से बोली *मैंने आपकी बातचीत* सुन ली है।

ऊपर दिए उदाहरण में मैंने का प्रयोग 'श्यामा' के लिए और आपकी का प्रयोग 'माँ' के लिए हो रहा है। जब सर्वनाम का प्रयोग कहने वाले, सुनने वाले या किसी तीसरे के लिए हो, तो उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। नीचे दिए गए वाक्यों में तीनों प्रकार के पुरुषवाचक सर्वनामों के नीचे रेखा खींचो—

उत्तर— एक दिन दीपू और नीलू यमुना तट पर बैठे शाम की ठंडी हवा का आनंद ले रहे थे। तभी उन्होंने देखा कि

एक लंबा आदमी लड़खड़ाता हुआ उनकी ओर चला आ रहा है। पास आकर उसने बड़े दयनीय स्वर में कहा, ''मैं भूख से मरा जा रहा हूँ। क्या आप मुझे कुछ खाने को दे सकते हैं?''

प्रश्न 2. तगड़े बच्चे मसालेदार सब्ज़ी बड़ा अंडा

यहाँ शब्द क्रमशः बच्चे, सब्ज़ी और अंडा की विशेषता यानि गुण बता रहे हैं इसलिए ऐसे विशेषणों को गुणवाचक विशेषण कहते हैं। इसमें व्यक्ति या वस्तु के अच्छे-बुरे हर तरह के गुण आते हैं। तुम चार गुणवाचक विशेषण लिखो और उनसे वाक्य बनाओ।

उत्तर— लंबा = लंबा व्यक्ति जा रहा है। गर्म = गर्म चाय पी लो।
आलसी = आलसी व्यक्ति सदा पीछे रहता है। सुगंधित = बगीचे में सुगंधित फूल हैं।

प्रश्न 3. (क) केशव ने झुँझलाकर कहा... (ग) केशव घबराकर उठा...
(ख) केशव रोनी सूरत बनाकर बोला... (घ) केशव ने टोकरी को एक टहनी से टिकाकर कहा...
(ङ) श्यामा ने गिड़गिड़ाकर कहा...

- ऊपर लिखे वाक्यों में रेखांकित शब्दों को ध्यान से देखो। ये शब्द रीतिवाचक क्रियाविशेषण का काम कर रहे हैं क्योंकि ये बताते हैं कि कहने, बोलने और उठने की क्रिया कैसे हुई। 'कर' वाले शब्दों के क्रियाविशेषण होने की एक पहचान यह भी है कि ये अक्सर क्रिया से ठीक पहले आते हैं। अब तुम भी इन पाँच क्रियाविशेषणों का वाक्यों में प्रयोग करो।

उत्तर— (क) पिता ने अंक देख झुँझलाकर कहा... (ग) दफ़्तर जाने में देर होने पर वह घबराकर भागा...
(ख) गरीब व्यक्ति ने गिड़गिड़ाकर कहा... (घ) मैं तकिए से सिर टिकाकर बैठा...
(ङ) मास्टरजी के डाँटने पर उसने रोनी सूरत बनाकर कहा...

प्रश्न 4. नीचे प्रेमचंद की कहानी 'सत्याग्रह' का एक अंश दिया गया है। तुम इसे पढ़ोगे तो पाओगे कि विराम चिह्नों के बिना यह अंश अधूरा-सा है। तुम आवश्यकता के अनुसार उचित जगहों पर विराम चिह्न लगाओ—

उसी समय एक खोमचेवाला जाता दिखाई दिया 11 बज चुके थे चारों तरफ़ सन्नाटा छा गया था पंडित जी ने बुलाया खोमचेवाले खोमचेवाला कहिए क्या दूँ भूख लग आई न अन्न-जल छोड़ना साधुओं का काम है हमारा आपका नहीं मोटेराम अबे क्या कहता है यहाँ क्या किसी साधु से कम हैं चाहें तो महीने पड़े रहें और भूख न लगे तुझे तो केवल इसलिए बुलाया है कि ज़रा अपनी कुप्पी मुझे दे देखूँ, तो वहाँ क्या रेंग रहा है मुझे भय होता है

उत्तर— उसी समय एक खोमचेवाला जाता दिखाई दिया। ग्यारह बज चुके थे। चारों तरफ़ सन्नाटा छा गया था। पंडित जी ने बुलाया— खोमचेवाले! खोमचेवाला, ''कहिए, क्या दूँ? भूख लग आई न, अन्न-जल छोड़ना साधुओं का काम है, हमारा आपका नहीं 'मोटेराम' अबे क्या कहता है। यहाँ क्या किसी साधु से कम हैं? चाहें तो महीने पड़े रहें और भूख न लगे। तुझे तो केवल इसलिए बुलाया है कि ज़रा अपनी कुप्पी मुझे दे। देखूँ, तो वहाँ क्या रेंग रहा है मुझे भय होता है।''

कुछ करने को—

गरमियों या सरदियों में जब तुम्हारी लंबी छुट्टियाँ होती हैं, तो तुम्हारा दिन कैसे बीतता है? अपनी बुआ या किसी और को एक पोस्टकार्ड या अंतरदेशीय पत्र लिखकर बताओ।

आदरणीय मामा जी,
सादर प्रणाम।
मैं यहाँ पर कुशलपूर्वक हूँ और आपकी कुशलता चाहता हूँ। इस बार गरमी की छुट्टियों में मैंने कुछ करने की सोची है। मैं सुबह उठता हूँ, नहा-धोकर नाश्ता करके एक घंटा पढ़ता (गृहकार्य करता) हूँ। इसके पश्चात् दो घंटे टेलीविज़न पर ज्ञानवर्धक कार्यक्रम देखता हूँ। दोपहर के भोजन के बाद थोड़ा आराम करता हूँ। शाम को खेलता हूँ। खेलकर आने के पश्चात फिर एक घंटा गृहकार्य आदि करता हूँ। रात का भोजन घर के सभी सदस्यों के साथ और फिर दस बजे सो जाता हूँ। इस प्रकार मेरा पूरा दिन बीतता है। मेरी तरफ से मामी जी को प्रणाम, गुड़िया को प्यार।
आपका बेटा
हिमांशु

परीक्षोपयोगी अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर—

प्रश्न 1. चिड़िया ने अंडे कहाँ दिए?

उत्तर— चिड़िया ने अंडे केशव के घर की कार्निस पर दिए।

प्रश्न 2. दोनों बच्चों को दूध-जलेबी से भी अच्छा क्या लगता था?

उत्तर— दोनों बच्चों को दूध-जलेबी से भी अच्छा चिड़िया को देखना लगता था।

प्रश्न 3. तीन-चार दिन बीतने पर उन्हें कैसा लगने लगा?

उत्तर— तीन-चार दिन बीतने पर उन्हें लगने लगा कि अंडों से बच्चे निकल आए होंगे।

प्रश्न 4. घोंसले को ढकने के लिए उन्होंने क्या किया?

उत्तर— घोंसले को ढकने के लिए उन्होंने कूड़ा फेंकने वाली टोकरी का प्रयोग किया।

प्रश्न 5. स्टूल को किसने पकड़ रखा था?

उत्तर— स्टूल को श्यामा ने पकड़ रखा था।

प्रश्न 6. केशव ने श्यामा को क्यों डाँटा था?

उत्तर— श्यामा का दिल ऊपर कार्निस पर लगा हुआ था। बार-बार उसका ध्यान उधर चला जाता और हाथ ढीले पड़ जाते। इससे स्टूल हिलने लगता, तभी केशव ने दबी आवाज में श्यामा को डाँटा।

प्रश्न 7. केशव श्यामा को स्टूल पर क्यों नहीं चढ़ने दे रहा था?

उत्तर— केशव श्यामा को स्टूल पर इसलिए नहीं चढ़ने दे रहा था, क्योंकि वह छोटी थी। अगर वह कहीं गिर पड़ती तो माँ से बहुत डाँट पड़ती।

प्रश्न 8. अंडों के टूटने पर उनमें से क्या निकला?

उत्तर— अंडों के टूटने पर उनमें से चूने के जैसा उजला-उजला पानी निकला।

निबंधात्मक प्रश्नोत्तर—

प्रश्न 1. अंडों के टूट जाने पर माँ के यह पूछने पर कि—'तुम लोगों ने अंडों को छुआ होगा।' के जवाब में श्यामा ने क्या कहा और उसने ऐसा क्यों किया?

उत्तर— जब माँ ने आकर टूटे हुए अंडों को देखा और गुस्से से पूछा— तुम लोगों ने अंडों को छुआ होगा। तब श्यामा ने कहा— केशव ने अंडों को छेड़ा था अम्माँ जी। उसने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि उसे लग रहा था शायद उन्होंने अंडों को ठीक तरह से नहीं रखा जिससे वे नीचे गिर गए। केशव को सज़ा मिलनी ही चाहिए। उसे अपने भइया पर बिलकुल तरस नहीं आ रहा था।

प्रश्न 2. पाठ के आधार पर बताओ कि अंडे गंदे क्यों हुए और उन अंडों का क्या हुआ?

उत्तर— पाठ के आधार पर कह सकते हैं कि पक्षी अपने अंडे स्वयं सेते हैं। अगर कोई दूसरा उनके अंडों को हाथ भी लगा दे तो वे उन अंडों को छोड़ या तोड़ देते हैं। इसके अनुसार केशव के छूने से अंडे गंदे हो गए और चिड़ियों ने उन अंडों को नीचे गिरा दिया। जिससे वे टूट गए।

प्रश्न 3. केशव और श्यामा ने चिड़िया और अंडों की देखभाल के लिए किन तीन बातों का ध्यान रखा?

उत्तर— केशव और श्यामा ने चिड़िया और अंडों की देखभाल के लिए निम्न तीन बातों का ध्यान रखा—

(क) दोनों ने फ़ैसला किया कि कार्निस पर थोड़ा-सा दाना रख दिया जाए ताकि चिड़ियों को दाने के लिए उड़कर कहीं दूर न जाना पड़े।

(ख) चिड़िया की प्यास बुझाने के लिए पानी का इंतज़ाम किया।

(ग) धूप से बचाने के लिए कपड़े की छत बनाने का फ़ैसला किया।

प्रश्न 4. कार्निस पर अंडों को देखकर केशव और श्यामा के मन में जो कल्पनाएँ आईं और उन्होंने चोरी-चुपके जो कुछ कार्य किए, क्या वे उचित थे? तर्क सहित उत्तर लिखो।

उत्तर— कार्निस पर अंडों को देखकर केशव और श्यामा के मन में चिड़ियों को खाने-पीने और धूप से बचाने की

कल्पनाएँ आईं। इसके लिए उन्होंने कटोरी में दाना-पानी रखा और धूप से बचाने के लिए टूटी टोकरी से घोंसले को ढक दिया। बाल सुलभ प्रश्नों को देखते हुए हम कह सकते हैं कि दोनों बच्चों द्वारा किया गया कार्य उचित था। बच्चों ने यह कार्य अपनी समझ से किया। उन्हें लग रहा था कि ऐसा करने से चिड़िया आराम से उन्हीं के घर में रहेगी और उसे बाहर भी नहीं जाना पड़ेगा। उनके द्वारा किए गए कार्यों से यही पता चलता है कि वे दोनों अंडों तथा बच्चों को बचाना चाहते थे।

प्रश्न 5. पाठ से मालूम करो कि माँ को हँसी क्यों आई ? तुम्हारी समझ से माँ को क्या करना चाहिए था ?

उत्तर— बच्चों की भोली बात को सुनकर माँ को हँसी आ गई। अंडों के टूटने पर जब माँ ने बताया कि इनका पाप तुम्हारे सिर पर लगेगा तो केशव ने कहा कि मैंने तो सिर्फ अंडों को गद्दी पर रखा था। हमारी समझ से माँ ने जो किया वह बिलकुल ठीक था क्योंकि बच्चों को इस प्रकार न समझाया जाता तो हो सकता था ऐसी गलती वे फिर कर बैठते।

- **बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर—**

1. 'नादान दोस्त' कहानी के लेखक कौन हैं—
(क) साहिर लुधियानवी (ग) कृष्णा सोबती
(ख) प्रेमचंद (घ) गुणाकर मुले

2. 'नादान दोस्त' कहानी में नादान कौन है—
(क) अम्माजी (ग) केशव
(ख) पिताजी (घ) कुमार

3. चिड़िया ने अंडे कहाँ दिए थे—
(क) दीवार पर (ग) घर में
(ख) छत पर (घ) कार्निस पर

4. केशव की बहन का क्या नाम था—
(क) रमा (ग) श्यामा
(ख) माधुरी (घ) कृष्णा

5. श्यामा चिड़िया के बच्चों के लिए क्या चारा लाई—
(क) हरी-हरी घास (ग) ताजी घास
(ख) चावल के दाने (घ) अनार के दाने

6. केशव ने चिड़िया के बच्चों के लिए पानी किसमें भरा था—
(क) पीतल की कटोरी में
(ख) स्टील की कटोरी में
(ग) पत्थर की प्याली में
(घ) मिट्टी की कटोरी में

7. केशव ने घोंसले पर छाया किससे की—
(क) कपड़े ठूंस कर (ग) कूड़े की बाल्टी से
(ख) घास-फूँस से (घ) घोंसला बनाकर

8. दोनों बच्चों को किसने सुलाया था—
(क) बाबूजी ने (ग) ताईजी
(ख) अम्माजी (घ) चाचीजी ने

9. केशव किस पर चढ़कर घोंसले तक पहुँचा—
(क) मेज पर (ग) स्टूल पर
(ख) दीवार पर (घ) छत पर

10. घोंसले में कितने अंडे पड़े थे—
(क) 2 (ग) 5
(ख) 4 (घ) 3

11. गद्दी के लिए चिथड़े कौन लेकर आया—
(क) श्यामा (ग) केशव
(ख) अम्माजी (घ) बाबूजी

12. श्यामा की आँखों में आँसू क्यों आए—
(क) माँ के डर से (ग) अंडे न दिखाने से
(ख) केशव के डर से (घ) बाबूजी के डर से

13. श्यामा ने माँ से अंडों के लिए चावल तथा पानी रखने का जिक्र क्यों नहीं किया—
(क) माँ के भय से
(ख) पिता के भय से
(ग) केशव के पिटने के भय से
(घ) भाई के भय से

14. चार बजे यकायक किसकी आँख खुली—
(क) केशव की (ग) अम्मा की
(ख) श्यामा की (घ) बाबूजी की

15. तीनों अंडों का क्या हुआ—
(क) चिड़िया ले गई (ग) गिर कर टूट गए
(ख) बच्चे निकल गए (घ) कहीं और चले गए

16. माँ के नाराज होने पर भीगी बिल्ली कौन बन गया—
(क) श्यामा (ग) A और B दोनों
(ख) केशव (घ) कोई भी नहीं

17. अंडे क्यों टूट गए थे—
(क) केशव के छूने से (ग) अम्मा के छूने से
(ख) श्यामा के छूने से (घ) बाबूजी के छूने से

उत्तर— 1. (ख), 2. (ग), 3. (घ), 4. (ग), 5. (ख), 6. (ग), 7. (ग), 8. (ख), 9. (ग), 10. (घ), 11. (क), 12. (ग), 13. (ग), 14. (ग), 15. (ग), 16. (ख), 17. (क)।